संवाद

शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास में अहम भूमिका निभाती है। यह केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की आधारशिला है। शिक्षा न केवल मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में सहायक होती है, बल्कि व्यक्ति को आत्मनिर्भर, जागरूक और आत्मविश्वासी भी बनाती है। यह सही निर्णय लेने और जीवन की चुनौतियों का समाधान खोजने की क्षमता विकसित करती है। शिक्षा किसी भी समाज या राष्ट्र की प्रगति की नींव है। यह जीवन को सार्थक, संतुलित और बेहतर बनाती है। इसलिए, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को हर व्यक्ति तक पहुँचाना आवश्यक है। शिक्षा का आधार केवल विद्यालय तक सीमित नहीं है; इसका आरंभिक स्वरूप घर से शुरू होता है। घर बच्चों की पहली पाठशाला माना जाता है, जहाँ वे अपने जीवन के शुरुआती मूल्य और संस्कार सीखते हैं। विद्यालय, औपचारिक और व्यवस्थित शिक्षा प्रदान करने का स्थान है। घर और विद्यालय दोनों मिलकर बच्चों की जड़ों को मजबूत बनाते हैं और उन्हें ऊँचाई तक पहुँचने में मदद करते हैं। एक सफल शिक्षा प्रणाली तभी विकसित हो सकती है, जब घर और विद्यालय मिलकर बच्चों की समग्र विकास में योगदान दें। हम सभी का उद्देश्य है कि हमारी कक्षा में बच्चे न केवल सीखें, बल्कि सीखने का आनंद भी लें। हमें सोचना चाहिए कि कैसे बच्चों को शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाया जाए।

प्रस्तुत अंक में कुल 13 लेख, 2 कविता, 2 बालमन और विशेष शामिल किए गए हैं। रा.शै.अ.प्र.प. ने अपने पाठ्यक्रम और पुस्तकों के माध्यम से विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को जोड़ने के सराहनीय प्रयास किए हैं। नई पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रमों को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि वे घर और विद्यालय के बीच सेतु का कार्य करें। इन पुस्तकों में गतिविधि आधारित शिक्षण, प्रश्नावली और परिवार के साथ चर्चा जैसे नवाचार शामिल हैं, जो अभिभावकों को शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाते हैं। इस अंक में रा.शै.अ.प्र.प. की बुनियादी और प्रारंभिक (प्रिपेरेटरी) स्तर की हिंदी, अंग्रेजी, गणित और पर्यावरण विषयों पर आधारित 'हमारा अद्‌भुत संसार' पाठ्यपुस्तकों की सहज समीक्षा और विश्लेषण हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशी शिक्षा, तकनीकी प्रयोग, मूल्यों के विकास और कथा-कहानियों को विशेष महत्व दिया गया है। इस नीति से संबंधित विविध लेख भी इस अंक में सम्मिलित किए गए हैं। भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया 'निपुण भारत मिशन' 2026–27 तक सभी बच्चों को बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी) में दक्ष बनाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखता है। यह मिशन, शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर बच्चों के समग्र विकास का एक सशक्त आधार तैयार करने की पहल है। इस अंक में हरियाणा राज्य द्वारा निपुण भारत मिशन के तहत किए जा रहे प्रयासों का विशेष उल्लेख किया गया है। हरियाणा राज्य में, इस मिशन के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अभिनव कदम उठाए जा रहे हैं, जो अन्य राज्यों के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत हो सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे यह प्रयास न केवल बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत करते हैं, बल्कि एक सशक्त और जागरूक समाज के निर्माण की ओर भी अग्रसर हैं। घर और विद्यालय के तालमेल, नवाचारपूर्ण पाठ्यक्रम और नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ, शिक्षा का यह स्वरूप समाज और राष्ट्र के लिए परिवर्तनकारी सिद्ध होगा।

एक शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नहीं होता है, बल्कि बच्चों के लिए एक प्रेरक और मार्गदर्शक भी होता है। हमें बच्चों की जिज्ञासा का सम्मान करना चाहिए। उनकी अलग-अलग सीखने की गति और क्षमताओं को समझना चाहिए और उन्हें सवाल पूछने तथा उनके उत्तर खोजने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। हर बच्चे पर समान रूप से ध्यान देना चुनौतीपूर्ण होता है, कक्षा में सीखने का आनंद कैसे बढ़ाएँ, अगर आपके पास कोई अन्य अनुभव या विचार है, तो कृपया उसे हमारे साथ साझा करें। यह भी बताएँ कि अभिभावकों को अपने बच्चों की पढ़ाई में सहयोग करने के लिए आप अभिभावकों को कैसे प्रोत्साहित करतें हैं।

पत्रिका में विशेष के अंतर्गत 'हमारा अद्भुत संसार' कक्षा 3 में शामिल 'पाठ्यपुस्तक के बारे में' विषय को शामिल किया गया है। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। यदि पत्रिका के संबंध में आपका कोई सुझाव हो तो हमें अवश्य भेजें। हम अपने आगामी अंक में उन्हें शामिल करने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

अकादमिक संपादक